Tender Heart High School, Sector-33 B, Chandigarh.

कक्षा - नौवीं
विषय - हिन्दी साहित्य शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक - एकांकी संचय

पाठ - 4 'सूखी डाली' (एकांकी) लेखक - जैनेन्द्रनाथ 'अश्क'

सुप्रभात प्यारे बच्चो !

आज हम कक्षा नौवीं की हिन्दी साहित्य की पाठ्य-पुस्तक एकांकी संचय की पृष्ठ संख्या 39 पर दिए पाठ - 4 'सूखी-डाली' नामक एकांकी के तीसरे दृश्य का अध्ययन करेंगे।

बच्चो ! आज हम 'सूखी डाली' नामक एकांकी को पढ़ने व समझने जा रहे हैं इसलिए आप सभी अपनी-अपनी पुस्तक एवं एक उत्तर - पुस्तिका निकाल लें और पढ़ने के लिए तैयार हो जाएँ। पाठ के मध्य आपसे इनसे जुड़े कुछ प्रश्न भी पूछे जाएँगे, जिनके उत्तर आप इसे ध्यानपूर्वक सुनकर ही दे पाओगे। आशा करती हूँ कि अब आप पढ़ने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं।

बच्चो ! आगे बढ़ने से पहले एकांकी के पहले और दूसरे दृश्य को संक्षेप में जान लेते हैं। दादा जी मूलराज का परिवार पर पूर्ण अधिकार है। उनकी आयु 72 वर्ष होने पर भी शरीर में कोई झुकाव नहीं है। सरकार ने 1947 के युद्ध में दादा जी के बड़े बेटे के शहीद होने पर उन्हें एक सुरक्षा ज़मीन दी, जिसे उन्होंने (दादा जी ने) अपनी मेहनत, लगन और दूरदर्शिता से दस सुरक्षा में बदल दिया। समाज में उनका काफी रुतबा (दर्जा, ओहदा) है।

एकांकी के आरंभ में इंदु गुस्से से प्रवेश करती है।

बड़ी बहू के पूछने पर इंदु बताती है कि छोटी बहू (बेला) ने रजवा को नौकरी से निकाल दिया है। उनका मानना है कि न तो रजवा को काम करने का सलीका है और न ही घरवालों को काम करवाने का। इन्दु के अनुसार छोटी बहू अपने आगे सबको (ससुरालवालों को) मूर्ख और गँवार समझती है। उन्हें अपने मायके का बहुत घमण्ड है। रजवा भी छोटी बहू (बेला) का काम करने से इन्कार कर देती है। उसी समय मँझली बहू हँसते हुए प्रवेश करती है। पूछने पर वह बताती है कि छोटी बहू ने परेश की वह हालत बनाई कि वह अपना सा मुँह लेकर दादा जी के पास भाग गया। मँझली बहू से सभी को मालूम हुआ कि परेश के नहाने चले जाने पर छोटी बहू ने घर के फर्नीचर को पुराना और सड़ा-गला बताकर बाहर फेंक दिया। इंदु के विचार से छोटी बहू (बेला) कुछ करती-धरती नहीं केवल बातें ही बनाती रहती है। इस पर छोटी भाभी (इंदु की माँ) ने उसे समझाया कि वह कपड़े गुसलखाने से आँगन में रख दे, वह बहू को समझा देगी। बड़ी बहू के यह कहने पर कि छोटी बहू पढ़ी-लिखी होकर क्या कपड़े धोएगी। तब इंदु चिढ़ कर कहती है कि उसके हाथ नमक-मिर्ची से नहीं बने, जो गल जाएँगे।

एकांकी के दूसरे दृश्य में दादा जी आराम से बैठे हुक्का पी रहे हैं और मँझला बेटा कर्मचन्द उनके पैर दबा रहा है। कर्मचन्द द्वारा बच्चों को डाँटने पर दादा जी कहते हैं कि बच्चों को खेलने दो। उन्होंने अनजाने में ही टूटी डाली को आँगन में लगा दिया है। वे कर्मचन्द को समझाते हैं कि पेड़ से एक बार टूटी डाली लाख पानी देने पर भी नहीं पनपती। हमारा परिवार बरगद के विशाल पेड़ के समान है। कर्मचन्द जब उन्हें परेश के अलग होने की बात कहता है कि उसकी बहू खुश नहीं है। इस पर दादा जी कहते हैं कि उनके विचार से शिकायत को आरंभ में ही मिटा देना चाहिए। कर्मचन्द द्वारा यह कहने पर कि बहू हमारे

घराने को मायके से छोटा समझकर घृणा करती है तब दादा जी समझाते हैं कि बड़प्पन मन का होता है, बाहरी वस्तु का नहीं। कर्मचन्द के जाने पर परेश प्रवेश करता है। दादा जी के यह पूछने पर कि उनके कपड़े धुल गए हों तो ले आओ, लेकिन परेश लज्जित सा सिर झुका लेता है। दादा जी परेश से कहते हैं कि तुम्हारे ताऊ को नए फैशन की जानकारी नहीं है। अतः तुम छोटी बहू को बाज़ार से उसकी पसंद की चीज़े दिलवा लाओ। वह (बेला) अपने पिता की इकलौती संतान है। इस भीड़-भाड़ से वह घबराती होगी। हम सब मिलकर उसका मन लगाने का प्रयास करेंगे। लेकिन जब परेश उन्हें बताता है कि घर की सभी महिलाएँ उस की शिकायत करती हैं तथा वह समझती है कि छोटी होने के कारण सब उसकी आलोचना करती और आदेश देती हैं इसलिए वह परिवार से अलग होना चाहती है। दादा जी, परेश को इस समस्या का हल शीघ्र निकालने का आश्वासन देते हैं। समस्या को हल करने के लिए दादा जी छोटी बहू को छोड़कर घर के सभी सदस्यों को बुलाकर समझाते हैं कि मुझे यह जानकर बहुत दुःख हुआ कि छोटी बहू का मन यहाँ नहीं लगता। छोटी बहू एक बड़े घर की पढ़ी लिखी लड़की है। वहाँ सबसे आदर पाती थी लेकिन यहाँ छोटी बहू होने के कारण उसे सबका आदेश मानना पड़ता है, जिससे उसका व्यक्तित्व दब गया है। छोटी बहू अक्ल में हम सबसे बड़ी है, हमें उसकी बुद्धि और योग्यता का लाभ उठाना चाहिए। इसलिए मेरी इच्छा है कि यहाँ भी उसे उचित आदर-सत्कार मिले, सब उसका कहना मानें और उसका काम भी आपस बाँट लें। दादा जी मँझली बहू को अपनी हँसी को उन लोगों तक सीमित करने को कहते हैं, जो उन्हें पसंद करते हैं इसी प्रकार वह इंदु को भी समझाते हैं कि बेला बुद्धिमती सभ्य तथा शिक्षित है, इसलिए उसे उनका आदर करना चाहिए।

बच्चो! तीसरे दृश्य के आरंभ में बेला बरामदे में बेचैनी से घूमती हुई दिखाई देती है। उसके एक हाथ में

पुस्तक है। ऐसा लगता है मानो किताब पढ़ते-पढ़ते कोई विचार आ जाने से वह उठकर घूमने लगी हो। बेला अपने आप से कहती है कि मैं विवाह के बाद किन लोगों के बीच आ गई हूँ। जिनको मैं समझ ही नहीं सकी हूँ। आज कुछ और है, कल कुछ और। इस प्रकार बेला घरवालों के बदले व्यवहार से परेशान होकर बड़-बड़ा रही है। वह फिर से कुर्सी पर बैठ जाती है और पुस्तक खोल लेती है, तभी उसकी सास (छोटी भाभी) प्रवेश करती हैं। वे बेला से कहती हैं कि तुमने पुराने फर्नीचर को बाहर निकालकर बहुत अच्छा किया। उन्होंने इसके लिए बेला की प्रशंसा की और कहा कि तुम पेरश के साथ जाकर अपनी पसंद का सामान खरीद लाओ। मैं रजवा से कहकर इन्हें हटा देती हूँ। बेला अपनी सास को बैठने के लिए कहती है तो वे मना करती हुई कहती हैं कि रजवा मेरे पास आकर फूट-फूटकर रो रही थी। वैसे तो वह समझदार विश्वसनीय और आज्ञाकारी है लेकिन उससे वे काम कैसे हो सकते हैं, जो उसने कभी किय ही नहीं। वे बेला से रजवा को माफ़ करने की सिफ़ारिश भी करती है और यह भी विश्वास दिलाती हैं कि वह अब गलती नहीं करेगी, मैं उसे समझा दूँगी। वे (छोटी भाभी) यह कहकर कि तुम अपना पढ़ो, मैं तुम्हारा समय नष्ट नहीं करूँगी, चली जाती हैं।

छोटी भाभी के चले जाने के बाद बेला लंबी साँस लेती है और स्वयं से कहती है कि इन लोगों का कुछ पता नहीं चलता। अभी परसों तो वे मुझे रजवा के लिए डाँट रही थी और आज एकदम कैसे बदल गई। तभी मँझली भाभी और बड़ी बहू प्रवेश करती हैं।

मँझली भाभी बेला को रजवा के संबंध में बताते हुए कहती हैं कि दादा जी हमेशा से ही पुराने नौकरों को काम पर रखने के पक्ष में हैं। रजवा का परिवार कई पीढ़ियों से हमारे घर में काम कर रहा है। पहले रजवा की सास यहाँ काम करती थी अब रजवा और उसकी बहू भी यहाँ काम करती हैं।

मँझली भाभी की बात सुनकर बड़ी बहू ने भी बेला को सुझाव दिया कि वह रजवा की बहू को अपने पास काम पर लगा ले। वह अभी उम्र में छोटी है इसलिए बेला के बताने-सिखाने पर वह जल्दी काम सीख जाएगी। बड़ी बहू बेला से यह भी कहती है कि हम आपसे वर्ग में और बुद्धि में छोटी हैं।

इस प्रकार घर की सभी स्त्रियाँ बेला से 'आप' और 'जी' कहकर बात करने लगती हैं अर्थात् सब उसके साथ सम्मानपूर्वक बातें कर रहे हैं, उसे अपने आप से बड़ा बता रहे हैं जबकि वह घर में सबसे छोटी है। बेला को ये बातें, ये सम्मान, ये हद से ज्यादा विनम्रता दिखाना अच्छा नहीं लग रहा है। बड़ों के द्वारा उसे इतना आदर देना ऐसा लग रहा है जैसे वे सब उसके साथ परायों-सा व्यवहार कर रहे हैं। यह कहकर बेला सआँसी सी (रोने जैसी हालत में) होकर वहाँ से चली जाती है।

तभी हँसी-मज़ाक करते हुए मँझली बहू, इंदु और पारो का प्रवेश होता है। वे हँसते हुए अपने पड़ोस में घटित एक घटना का ज़िक्र करती हैं। घर की अन्य महिलाएँ मँझली बहू की बातें सुनकर हँसी-मज़ाक करने लगती हैं।

बच्चो! अब मैं आपसे कुछ प्रश्न पूछूँगी। प्रश्न सुनकर आप अपनी ऑडियो को तीन मिनट के लिए रोककर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखेंगे। प्रश्न इस प्रकार हैं :-

प्रश्न 1. बड़ी बहू ने बेला को क्या सुझाव दिया?

प्रश्न 2. अचानक बड़ों के द्वारा आदर देना बेला को कैसा लग रहा था?

प्रश्न 3 घर की महिलाएँ किस घटना का जिक्र करके हँसी मज़ाक करने लगती हैं?

बच्चो! उत्तर लिखने के लिए दिया गया समय अब समाप्त हो चुका है। आशा है कि आपने पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिख लिए होंगे। उन प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार हैं :-

उत्तर 1. बड़ी बहू ने बेला को सुझाव दिया कि वह रजवा को बहू को अपने पास काम पर रख लें। वह जल्दी काम सीख जाएगी।

उत्तर 2. बड़ों के द्वारा बेला को अचानक आदर देना ऐसा लग रहा था मानो सब उसके साथ परायों-सा व्यवहार कर रहे हैं।

उत्तर-3 घर की महिलाएँ पड़ोस में घटित एक घटना का जिक्र करके हँसी-मज़ाक करने लगती हैं।

बच्चो ! अब एकांकी को आगे पढ़ना व समझना आरंभ करते हैं। घर की सभी महिलाएँ जब मँझली बहू की बातें सुनकर हँस रही होती हैं तभी इंदु सबको चुप होने के लिए कहती है और बताती है कि भाभी आ रही हैं। बेला के आते ही सबकी हँसी बंद हो जाती है। मँझली भाभी बेला को कुर्सी पर बैठने के लिए कहती है। बेला कुर्सी पर न बैठकर तख्त पर बैठ जाती है। बेला को लगता है कि उसके आने से यहाँ शांति छा गई है तब वह यह कहकर वहाँ से चली जाती है कि मैं तो इधर ही जा रही थी। मैं आपकी हँसी में बाधा नहीं डालना चाहती। आप हँसते रहिए, बातें कीजिए - ऐसा कहकर बेला चली जाती है।

मँझली बहू इंदु से कहती हैं कि यदि दादा जी को यह पता चल गया कि हमारे यहाँ बैठने से छोटी बहू (बेला) की पढ़ाई में खलल (बाधा) आता है तभी उन्हें रोकती हुई इंदु कहती है कि पर्दे वाली केवल यही एक जगह है, जहाँ हम बैठ कर बातें कर सकते हैं। जब मँझली बहू दादा जी के भय से इंदु को अपने कमरे में चलने के लिए कहती है तब इंदु यह कहकर मना कर देती है कि अभी दादाजी के कपड़े धोने हैं, चली जाती हैं। मँझली भाभी कहती हैं कि आप सब यहाँ मत बैठा कीजिए। चलो गोदाम में जाकर गेहूँ छँटवा लेते हैं। दिन समाप्त हो जाएगा महरियाँ (स्त्रियाँ) भी चली जाएँगी। मँझली बहू की बातों में न फँसकर बड़ी बहू मँझली भाभी के साथ वहाँ से चली जाती हैं।

मँझली बहू पारो को अपने कमरे में बुलाती है। उसके इनकार करने पर वह बड़ी भाभी को पड़ोस में हुई घटना के बारे में बताकर अपने कमरे की ओर ले जाती है क्योंकि यहाँ तो छोटी बहू की पढ़ाई में बाधा पड़ती है।

बाहर परेश और बेला बातें कर रहे हैं। बेला परेश को बता रही है कि घर के सभी बड़े - छोटे उससे आदर सूचक शब्दों से बातें करते हैं और उसे हर प्रकार से बड़ी समझ रहे हैं। उसे ऐसा महसूस हो रहा है कि वह अपरिचितों में आ गई है। इस प्रकार घर की स्त्रियों के अजीब व्यवहार से वह दुःखी है। बेला यह भी बताती है कि जब वह घर के अन्दर जाती है तो उसे देखकर बड़ी भाभी, मँझली भाभी और माँ जी तक खड़ी हो जाती हैं और यदि वे सभी हँस रही होती हैं तो उसके आने पर वे चुप हो जाती हैं। मेरे सामने कोई अधिक समय तक बात नहीं करतीं। सब इस प्रकार डरती हैं जैसे मुर्गे के बच्चे बाज से। अतः बेला स्वयं को इन सबसे अलग व अनजान मानकर अपने मायके जाने की इच्छा प्रकट करती है।

परेश बेला की असमंजस की स्थिति पर व्यंग्य करते हुए कहता है कि तुम आदर-सत्कार, आराम न जाने क्या चाहती हो? पहले तुम्हें शिकायत थी कि कोई तुम्हारा आदर नहीं करता, सब तुम्हें दबाते और काम करवाते हैं। अब सब बदल गए हैं, तुम्हारा आदर-सत्कार करते हैं तब भी तुम्हें परेशानी हो रही है। न जाने तुम क्या चाहती हो? ऐसा कहकर परेश चला जाता है। बेला निढाल (अत्यंत थकी हुई) होकर कुर्सी पर बैठ जाती है और सिसकते हुए स्वयं से कहती है कि न जाने मैं क्या चाहती हूँ। पर मैं इतना जानती हूँ कि यह सब आदर-सत्कार, सुख-आराम मैं नहीं चाहती।

तभी इन्दु मैले कपड़े हाथ में लिए बाहर के दरवाज़े से प्रवेश करती है। बेला असमंजस की स्थिति में सिसकने लगती है। इंदु बेला को भाभी न कहकर भाभी जी कहती है और पूछती है कि क्या आप रो रही हैं? बेला जब उसे 'भाभीजी' पुकारने के लिए मना करती है तब इंदु कहती है कि ऐसा कैसे हो सकता है। आप तो मुझसे बड़ी और अधिक पढ़ी-लिखी हैं। बेला के यह पूछने पर कि पहले तो तुम मुझे 'जी' कहकर नहीं बुलाया करती थीं, इंदु इसका कारण स्वयं को मूर्ख बताती है और कहती है कि दादा जी ने कहा था। अतः इंदु रोती हुई बेला को शांत करवाती है।

इंदु छोटी बहू बेला को बताती है कि जब दादा जी को पता चला कि तुम्हारा मन यहाँ नहीं लगता है और आप अलग बाग वाले घर में रहना चाहती हैं। दादा जी ने घर के अन्य सदस्यों को बुलाकर समझाया कि वे सब सहन कर सकते हैं परन्तु किसी का पृथक होना वे नहीं सह सकते। उन्होंने यह भी कहा कि यदि कोई परिवार से अलग होने की बात सोचता भी है तो वे ही घर से अलग हो जाएँगे। उन्होंने परिवार के सभी सदस्यों से तुम्हारा आदर तथा तुम्हारा काम करने के लिए कहा ताकि तुम्हें पढ़ने लिखने का समय मिल सके। बेला कहती है कि मैं तो सबका आदर नहीं बल्कि सबका साथ चाहती हूँ। इंदु की बातें सुनकर बेला को लगता है कि आप लोगों ने मुझे कितना गलत समझा और मैंने इन्हें। इन्दु बेला से जब उसके मैले कपड़े माँगती है और कहती है कि मैं दादा जी के कपड़े धोने जा रही हूँ, आपके भी धो देती हूँ तब बेला कुछ सोचती है और वह मन ही मन किसी बात का निश्चय ले लेती है। वह भी इंदु के साथ कपड़े धुलवाने में मदद करने की ज़िद करती है लेकिन इंदु कहती है कि दादा जी यह देखकर नाराज़ हो जाएँगे। बेला कहती है कि मैं दादा जी से कह दूँगी और वह इंदु को 'भाभी जी' कहने की बजाय भाभी कहने के लिए कहती है। दोनों कपड़े धोने चली जाती हैं।

तभी गैलरी में दादा जी प्रवेश करते हैं। वे बेला से काम करते देख इंदु को टोकते हैं तब बेला दादा जी से कहती है कि आप पेड़ से किसी डाली को टूटकर अलग होना तो पसंद नहीं करते, पर क्या आप चाहेंगे कि पेड़ से लगी-लगी वह डाली सूखकर मुरझा जाए? अर्थात् आप इस परिवार रूपी पेड़ से किसी सदस्य रूपी डाली को अलग होना नहीं देख सकते लेकिन किसी डाली का पेड़ में लगे हुए सूख जाना आप कैसे सह सकते हैं? इस प्रकार वह अपने परिवर्तित व्यवहार से सबका आदर पा जाती है। बेला के इस कथन के साथ ही पर्दा गिरता है।

बच्चो! अब हमारी यह एकांकी समाप्त हो चुकी है।

आशा करती हूँ कि आपको यह एकांकी पूर्ण रूप से समझ आ गई होगी। सभी छात्र इस एकांकी को पुनः पढ़ेंगे तथा समझने का प्रयास भी करेंगे।

गृहकार्य

* निम्नलिखित अवतरण पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए:-

"यह मेरी आकांक्षा है कि सब डालियाँ साथ-साथ फलें-फूलें, जीवन की सुखद, शीतल वायु के स्पर्श में झूमें और सरसराएँ विटप से अलग होने वाली डाली की कल्पना ही मुझे सिहरा देती है।"

प्रश्न (i) वक्ता और श्रोता कौन हैं? कथन का संदर्भ स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न (ii) सब डालियाँ साथ-साथ फलने-फूलने से क्या तात्पर्य है? डालियाँ शब्द किनके लिए प्रयोग किया गया है?

प्रश्न (iii) यह किसकी आकांक्षा है कि सब डालियाँ साथ-साथ फलें-फूलें और क्यों? इस एकांकी से आपको क्या शिक्षा मिलती है?

प्रश्न (iv) विटप से अलग होने वाली डाली की कल्पना से कौन सिहर उठता है और क्यों?

धन्यवाद।

[अंतिम पृष्ठ]